CPL-2 Examination
प्राकृत गद्य–पद्य
Paper- CPL-02

Time Allowed : Three Hours **Maximum Marks : 100**

There are 50 multiple choice question in this paper. Attemt all questions. Each question carries 2 marks. You have to answer the question by marking A/B/C or D in the OMR Sheet supplied to you alongwith the question paper. You must also darken the relevant option by making use of H.B. Pencil/ Blue Ball Pen/ Black Ball Pen. No marks will be deducted for wrong answer.

यह प्रश्नपत्र कुल 50 बहु वैकल्पिक प्रश्नों का है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है। आपको प्रश्नों के उत्तर अ स अथवा द का चयन करते हु ए प्रश्नपत्र के साथ वी/ब/**OMR Sheet** में दर्ज करने हैं। साथ ही सम्बन्धित गोले को भी एचअथवा काले बाॅल पेन से /नीले बाॅल पेन /पेन्सिल .बी . भरा जाना है। गलत उत्तर के लिए अंकों की कटौती नहीं की जायेगी।

१ तीर्थङ्कर महावीर के साधनामय जीवन को जानने से लाभ है-

(अ) ध्यान के महत्त्व को जानना (ब) समता के महत्त्व को जानना

(स) अहिंसा के महत्त्व को जानना (द) उपर्युक्त सभी

२ तीर्थङ्कर महावीर के साधनामय जीवन का वर्णन है-

(अ) वज्जालग्ग में (ब) अष्टपाहु डमें

(स) आचारांग सूत्र में (द) कार्तिकेयानुप्रेक्षा में

३ जैन आगम साहित्य जिस भाषा में निबद्ध है-

(अ) संस्कृत (ब) प्राकृत

(स) हिन्दी (द) अपभ्रंश

४ अर्धमागधी प्राकृत साहित्य भागों में वर्गीकृत है-

(अ) चार (ब) पाँच

(स) सात (द) तीन

५ बारह अंगों में प्रथम आगम है-

(अ) सूत्रकृतांग (ब) समवायांग

(स) आचारांग (द) स्थानांग

६ रात्रिभोजन त्याग आचारांग सूत्र में इस व्रत का पूरक है-

(अ) अहिंसाtr(ब) सत्य

(स) अस्तेय (द) अपरिग्रह

७ अष्टपाहु डइनकी रचना है-

(अ) आचार्य हरिभद्र (ब) आचार्य उमास्वामी

(स) आचार्य गुणभद्र (द) आचार्य कुन्दकुन्द

८ महावीर अपना समय व्यतीत करते थे-

(अ) खेल कूद में (ब) कथा-नाच-गान में

(स) आत्मध्यान में (द) विषयभोगों में

९ आचारांग की अहिंसा का आधार है-

(अ) समता की भावना (ब) त्याग की भावना

(स) प्रतिकार की भावना (द) शत्रुता की भावना

१० जण शब्द का अर्थ है-

(अ) जिन (ब) जन्म

(स) लोग (द) कुछ

११ आचारांग है-

(अ) मूलसूत्र (ब) छेदसूत्र

(स) अंगसूत्र (द) उपांगसूत्र

१२ अवि शब्द है-

(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम

(स) अव्यय (द) क्रिया

१३ उत्तराध्ययन सूत्र के अन्तर्गत आता है-

(अ) मूलसूत्र (ब) अंगसूत्र

(स) उपांगसूत्र (द) छेदसूत्र

१४ उत्तराध्ययन सूत्र की भाषा है-

(अ) अर्धमागधी (ब) मागधी

(स) शौरसेनी (द) पैशाची

१५ आप्तवचन से उत्पन्न अर्थज्ञान प्राप्त होता है-

(अ) पुराण में (ब) कोष में

(स) आगम में (द) व्याकरण में

१६ होमि शब्द का अर्थ है-

(अ) होता था (ब) होगा

(स) होता हूँ (द) जाता हूँ

१७ सुविम्हिओ शब्द का अर्थ है-

(अ) अत्यधिक चकित हुआ (ब) अत्यधिक हड़बडाया

(स) आचार्य युक्त (द) प्राचीन नगर

१८ द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हु ई-

(अ) ईसा पूर्व ४०० से २०० (ब) ईसा पूर्व ६०० से ४००

(स) ईसा पूर्व ३०० से १०० (द) ईसा पूर्व ५०० से २००

१९ अहंकारिता जनक है-

(अ) शांति की(ब) अशांति की

(स) त्याग की (द) संयम की

२० दशवैकालिक में महत्त्व प्रदर्शित है-

(अ) स्वाध्याय का (ब) हिंसा का

(स) अहिंसा का (द) संयम का

२१ 'विणयनासणो' शब्द का अर्थ है-

(अ) विनय का नाशक (ब) अहंकार का नाशक

(स) स्वाधीनता का नाशक (द) ज्ञान का नाशक

२२ 'माया' शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) क्रिया

(स) संज्ञा (द) कृदन्त

२३ वज्जालग्ग काव्य है-

(अ) सट्टकर (ब) मुक्तक

(स) खण्ड (द) महाकाव्य

२४ वज्जालग्ग के कर्ता हैं-

(अ) राजशेखर (ब) हरिभद्र

(स) कुन्दकुन्द (द) जयवल्लभ

२५ संभरइ शब्द का अर्थ है-

(अ) प्रसन्न करता है (ब) पीड़ित करता है

(स) स्मरण करता है (द) परोपकार करता है

२६ रुअइ शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) क्रिया

(स) अव्यय (द) संज्ञा

२७ दुर्जन के साथ रहने पर सज्जन भी होता है-

(अ) प्रशंसित (ब) हर्षित

(स) दुर्जन (द) इनमें से कोई नहीं

२८ अष्टपाहु डकी भाषा है-

(अ) शौरसेनी (ब) अर्धमागधी

(स) महाराष्ट्री (द) मागधी

२९ अष्टपाहु डके कर्ता हैं-

(अ) आचार्य कुन्दकुन्द (ब) आचार्य यतिवृषभ

(स) आचार्य समन्तभद्र (द) आचार्य सिद्धसेन

३० दर्शनपाहु डमें विषय है-

(अ) सम्यग्दर्शन का (ब) सम्यग्ज्ञान का

(स) सम्यक्चारित्र का (द) सम्यक् तप का

३१ शील का वर्णन जिस पाहु डमें किया गया है-

(अ) मोक्षपाहु ड (ब) लिंगपाहु ड

(स) शीलपाहु ड (द) चारित्रपाहु ड

३२ 'णाणसलिल' शब्द का अर्थ है-

(अ) चारित्ररूपी जल (ब) ज्ञानरूपी जल

(स) तपरूपी जल (द) दर्शनरूपी जल

३३ 'चारित्तमारूढो' का अर्थ है-

(अ) ज्ञान में आरूढ (ब) दर्शन में आरूढ

(स) चारित्र में आरूढ (द) व्यसनों में आरूढ

३४ पउमचरियं सर्गों में विभक्त है-

(अ) ११७ (ब) ११९

(स) ११८ (द) १२०

३५ पउमचरियं की प्राकृत है-

(अ) शौरसेनी (ब) अर्धमागधी

(स) मागधी (द) महाराष्ट्री

३६ कैकयी ने जिसके लिए राज्य मांगा था-

(अ) राम (ब) भरत

(स) लक्ष्मण (द) शत्रुघ्न

३७ कार्तिकेयानुप्रेक्षा में प्रतिपादित विषय है-

(अ) दश धर्म (ब) बारह तप

(स) बारह भावनाएँ (द) सोलह कारण भावनाएँ

३८ शरीर की अपवित्रता का वर्णन जिस अनुप्रेक्षा में है-

(अ) संवर (ब) संसार

(स) अशुचि (द) लोक

३९ पाचवीं अनुप्रेक्षा का नाम है-

(अ) अशरण (ब) एकत्व

(स) अशुचित्व (द) अन्यत्व

४० 'भंगुर' शब्द का अर्थ है-

(अ) विनाशवान (ब) विनाशरहित

(स) मरण (द) संयोग

४१ भरत का राज्यविधान पउमचरियं के जिस सर्ग में वर्णित है-

(अ) ३१ (ब) ३०

(स) ३२ (द) ३३

४२ 'जिणाययण' शब्द का अर्थ है-

(अ) जिन विश्राम स्थल (ब) मानव विश्राम स्थल

(स) सेना विश्राम स्थल (द) राजा विश्राम स्थल

४३ मेरुप्रभ हाथी की कथा संकलित है-

(अ) आचारांग से (ब) ज्ञाता धर्मकथा से

(स) उत्तराध्ययन से (द) व्याख्या प्रज्ञप्ति से

४४ मेरुप्रभ हाथी की कथा से भाषा पद्धति का ज्ञान होता है-

(अ) आध्यात्मिक (ब) सैद्धान्तिक

(स) नैयायिक (द) आगमिक

४५ 'कस्सेसा भज्जा' का अर्थ है-

(अ) यह किसकी बहिन है (ब) यह किसकी पुत्री है

(स) यह किसकी पत्नी है (द) यह किसकी माँ है

४६ 'हत्थिणाउर' शब्द का अर्थ है-

(अ) हाथी (ब) हस्तिनापुर

(स) हाथ (द) नगर

४७ अमांगलिक पुरुष था-

(अ) मूर्ख (ब) सज्जन

(स) दुर्जन (द) ज्ञानी

४८ अमांगलिक पुरुष की कथा के माध्यम से प्रहार किया गया है-

(अ) सज्जनता पर (ब) धार्मिकता पर

(स) रूढिवादिता पर (द) दुर्जनता पर

४९ विदुषी पुत्रवधू की कथा के लेखक हैं-

(अ) हरिभद्र (ब) स्वयंभू कवि

(स) हेमचन्द्र (द) कस्तूरविजय

५० विदुषी पुत्रवधू के ससुर का नाम था-

(अ) धर्मदास (ब) लक्ष्मीदास

(स) जिनदास (द) देवदत्त

५१ आचारांग से किसका महत्त्व ज्ञात होता है-

(अ) अहिंसा (ब) हिंसा

(स) परिग्रह (द) असत्य

५२ विशुद्ध आचार में विजय प्राप्ति होती है-

(अ) शत्रु पर (ब) शरीर पर

(स) मन पर (द) राग-द्वेष पर

५३ बारह अंगों में सम्मिलित नहीं है-

(अ) आचारांग (ब) सूत्रकृतांग

(स) उत्तराध्ययन (द) उपासकाध्ययन

५४ कार्तिकेयानुप्रेक्षा के रचयिता हैं-

(अ) आचार्य कुन्दकुन्द (ब) आचार्य हेमचन्द्र

(स) आचार्य यतिवृषभ (द) आचार्य कार्तिकेय स्वामी

५५ महावीर की विशेषता थी-

(अ) कषाय रहित थे (ब) शब्दों और रूपों में अनासक्त थे

(स) जीवनपर्यन्त समता युक्त रहे (द) उपर्युक्त सभी

५६ आचारांग की विशेषता है-

(अ) मानववाद (ब) आध्यात्मिकता

(स) अहिंसा (द) उपर्युक्त सभी

५७ लाढ देश के लोग थे-

(अ) हिंसक (ब) अहिंसक

(स) सहनशील (द) कषाय रहित

५८ उत्तराध्ययन सूत्र की भाषा यह है-

(अ) अर्धमागधी (ब) शौरसेनी

(स) अपभ्रंश (द) महाराष्ट्री

५९ आउकाय शब्द का अर्थ है-

(अ) वायु काय (ब) पृथ्वीकाय

(स) जलकाय(द) अग्निकाय

६० समण शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) क्रिया

(स) संज्ञा (द) अव्यय

६१ दशवैकालिक सूत्र के अन्तर्गत आता है-

(अ) अंगसूत्र (ब) उपांगसूत्र

(स) मूलसूत्र (द) छेदसूत्र

६२ विदुषी पुत्रवधू की कथा से महिमा का बोध होता है-

(अ) पुण्य की (ब) ज्ञान की

(स) व्रतों की (द) पाप की

६३ विदुषी पुत्रवधू ने जिस मुनिराज को आहार दिया था, वह थे-

(अ) वृद्ध (ब) बालक

(स) प्रौढ (द) युवा

६४ मुनिराज को पुत्रवधू ने सासु की उम्र बताई-

(अ) पाँच माह (ब) छः माह

(स) सात माह (द) चार माह

६५ 'जोव्वण' शब्द का अर्थ है-

(अ) यौवन (ब) योजन

(स) युक्त (द) बालक

६६ 'संसार' शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) क्रिया

(स) संज्ञा (द) अव्यय

६७ जया शब्द का अर्थ है-

(अ) तब (ब) जब

(स) कब (द) कौन

६८ मगियव्वं शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) क्रिया

(स) कृदन्त (द) अव्यय

६९ अमांगलिक पुरुष की बातों को सुनकर राजा हु आ-

(अ) क्रोधित (ब) हर्षित

(स) चिन्तित (द) सन्तुष्ट

७० नगर के निवासी अमांगलिक पुरुष को मानते थे-

(अ) मूर्ख (ब) ज्ञानी

(स) अपसगुनिया (द) श्रेष्ठी

७१ अमांगलिक पुरुष की कथा के अनुसार संसार में कोई भी व्यक्ति नहीं है-

(अ) मंगलमुख (ब) अमंगलमुख

(स) दुर्जन (द) सज्जन

७२ अमांगलिक पुरुष को वध से बचने का उपाय बताने वाला था-

(अ) राजा (ब) अमांगलिक का भाई

(स) अमंागलिक का पिता (द) बुद्धिमान व्यक्ति

७३ 'नायर' शब्द का अर्थ है-

(अ) नागरिक (ब) नगर

(स) नारद (द) नरम

७४ तुम्ह शब्द है-

(अ) संज्ञा (ब) कृदन्त

(स) सर्वनाम (द) अव्यय

७५ 'कस्सेसा भज्जा' कथा के रचयिता हैं-

(अ) जयचंद सूरि (ब) जिणहर्षगणि

(स) कस्तूरविजय (द) आचार्य रविषेण

७६ हस्तिनापुर के राजकुमार का नाम था-

(अ) वीर (ब) दुर्योधन

(स) अर्जुन (द) शूर

७७ सुमति कन्या का विवाह हु आ-

(अ) बालचन्द (ब) रूपचन्द

(स) कुरुचन्द (द) धर्मचन्द

७८ जिसने सुमति कन्या को जीवित किया वह उस कन्या का हु आ-

(अ) भाई (ब) पिता

(स) पुत्र (द) पति

७९ गंगप्पवाह शब्द का अर्थ है-

(अ) गंगा का प्रवाह (ब) यमुना का प्रवाह

(स) प्रवाह (द) गंगा नदी

८० 'वराणं' शब्द है-

(अ) अव्वय (ब) संज्ञा

(स) सर्वनाम (द) क्रिया

८१ मेरुप्रभ हाथी ने आयु का बंध किया-

(अ) मनुष्य (ब) देव

(स) तिर्यञ्च (द) नरक

८२ मेरुप्रभ हाथी नदी के किनारे विचरण करता था-

(अ) नर्मदा (ब) यमुना

(स) सरस्वती (द) गंगा

८३ मेरुप्रभ हाथी की कथा ज्ञाताधर्म कथा के अध्याय से संकलित है-

(अ) तृतीय (ब) पंचम

(स) प्रथम (द) द्वितीय

८४ सत्त्वानुकम्पा से होता है-

(अ) संसार का नाश (ब) कर्म का आस्रव

(स) संसार की वृद्धि (द) पाप का बंध

८५ पउमचरियं में चरित्र प्रतिपादित है-

(अ) राम का (ब) महावीर का

(स) कृष्ण का (द) कंस का

८६ रामचन्द्र जी पुत्र थे-

(अ) जनक के(ब) कैकेयी के

(स) दशरथ के (द) सुभद्रा के

८७ कैकेयी ने राज्य मांगा था-

(अ) राम के लिए (ब) लक्ष्मण के लिए

(स) शत्रुघ्न के लिए (द) भरत के लिए

८८ छः द्रव्यों का वर्णन है-

(अ) संवरानुप्रेक्षा में (ब) निर्जरानुप्रेक्षा में

(स) लोकानुप्रेक्षा में (द) संसारानुपे्रक्षा में

८९ पुद्गल है-

(अ) तत्त्व (ब) द्रव्य

(स) पदार्थ (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

९० धर्म के भेद होते हैं-

(अ) पाँच (ब) आठ

(स) सात (द) दस

९१ दसवें नम्बर की भावना है-

(अ) निर्जरा (ब) धर्म

(स) लोक (द) बोधिदुर्लभ

९२ उत्तराध्ययन का महानिग्रन्थीय अध्याय है-

(अ) १५वाँ (ब) १८वाँ

(स) १९वाँ (द) २०वाँ

९३ उत्तराध्ययन का समावेश है-

(अ) अंग (ब) उपांग

(स) मूलसूत्र (द) छेदसूत्र

९४ 'चेइए' शब्द है-

(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम

(स) कृदन्त (द) अव्यय

९५ नाहो शब्द का अर्थ है-

(अ) नहीं (ब) नाथ

(स) नाई (द) सचमुच

९६ दशवैकालिक का समावेश है-

(अ) मूलसूत्र (ब) उपांगसूत्र

(स) छेदसूत्र (द) अंगसूत्र

९७ दशवैकालिक सूत्र की भाषा है-

(अ) शौरसेनी (ब) अर्धमागधी

(स) पैशाची (द) महाराष्ट्री

९८ पुरिसाणं शब्द का अर्थ है-

(अ) पुरुषों को (ब) पुरुषार्थ को

(स) राज को (द) पुरुष को

९९ 'जं' शब्द है-

(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम

(स) कृदन्त (द) अव्यय

१०० 'हरंति' शब्द है-

(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम

(स) क्रिया (द) कृदन्त

१०१ महावीर के जीवन से जिसका महत्त्व हृदयंगम होता है-

(अ) स्वाध्याय (ब) प्रतिक्रमण

(स) ध्यान (द) अनशन

१०२ जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति का मूल आधार है-

(अ) तीर्थंकर महावीर के शिष्यों द्वारा प्रतिपादित जैन वाङ्मय

(ब) तीर्थंकर ऋषभदेव के शिष्यों द्वारा प्रतिपादित जैन वाङ्मय

(स) तीर्थंकर नेमिनाथ के शिष्यों द्वारा प्रतिपादित जैन वाङ्मय

(द) तीर्थङ्कर पाश्र्वनाथ के शिष्यों द्वारा प्रतिपादित जैन वाङ्मय

१०३ आचारांग में प्रतिपादित महत्त्वपूर्ण विषय है-

(अ) अहिंसा (ब) समता

(स) अनासक्ति (द) उपर्युक्त सभी

१०४ यह शौरसेनी प्राकृत में निबद्ध है-

(अ) आचारांग (ब) कार्तिकेयानुप्रेक्षा

(स) वज्जालग्ग (द) दशवैकालिक

१०५ आचारांग सूत्र प्रतिपादित विषय का उद्देश्य है-

(अ) दूसरों को गुलाम बनाने का उपाय बताना (ब) सांसारिक सुखों का प्रतिपादन करना

(स) आध्यात्मिक साधना का प्रतिपादन (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

१०६ लाढ़ देश के लोगों की विशेषता थी-

(अ) ध्यान प्रवृत्ति (ब) हिंसक प्रवृत्ति

(स) अहिंसक प्रवृत्ति (द) अतिथि सम्मान

१०७ अर्धमागधी मूलसूत्रइन भागों में विभक्त है-

(अ) आठ (ब) चार

(स) नव (द) दस

१०८ उत्तराध्ययन सूत्र जाना जाता है-

(अ) उपांग सूत्र (ब) छेद सूत्र

(स) अंग सूत्र (द) मूल सूत्र

१०९ तत्थ शब्द है-

(अ) सर्वनाम (ब) अव्यय

(स) विशेषण (द) क्रिया

११० कुक्कुर शब्द का अर्थ है-

(अ) गाय (ब) हाथी

(स) कुत्ता (द) गधा

१११ हस्तिनापुर के राजकुमार की पुत्री का नाम था-

(अ) सुमति (ब) द्रोपदी

(स) गुणमाला (द) मैनासुन्दरी

११२ प्रथम नम्बर का पाप है-

(अ) असत्य (ब) हिंसा

(स) चौर्य (द) परिग्रह

११३ सुमति की माता का नाम था-

(अ) मनोरमा (ब) चंदना

(स) लक्ष्मी (द) गंगा

११४ कुरुचन्द की पत्नी का नाम था-

(अ) गुणमाला (ब) मनोवती

(स) सुमति (द) अंजना

११५ खरगोश की रक्षा की थी-

(अ) गाय ने (ब) शेर ने

(स) हाथी ने (द) घोड़े ने

११६ शूर राजकुमार था-

(अ) दिल्ली का (ब) मथुरा का

(स) हस्तिनापुर का (द) साकेत का

११७ अष्टपाहुडके रचयिता हैं-

(अ) समन्तभद्र (ब) उमास्वामी

(स) कुन्दकुन्द (द) यतिवृषभ

११८ आठवें नम्बर का पाहु डहै-

(अ) मोक्ष पाहु ड (ब) लिंग पाहु ड

(स) सूत्र पाहु ड (द) शील पाहु ड

११९ मोक्ष का प्रथम सोपान है-

(अ) सम्यग्दर्शन (ब) सम्यग्ज्ञान

(स) सम्यक्चारित्र (द) सम्यक् तप

१२० भावों की महिमा का प्रतिपादन है-

(अ) शील पाहु डमें (ब) बोध पाहु डमें

(स) दर्शन पाहु डमें (द) भाव पाहु डमें

१२१ भाव रहित व्यक्ति के लिए है-

(अ) तप करना सार्थक (ब) ध्यान कना सार्थक

(स) परिग्रह त्याग सार्थक (द) सभी निरर्थक

१२२ पउमचरियं का रचनाकाल है-

(अ) प्रथम-द्वितीय शताब्दी (ब) द्वितीय-तृतीय शताब्दी

(स) तृतीय-चतुर्थ शताब्दी (द) चतुर्थ-पंचम शताब्दी

१२३ पउमचरियं दशरथ प्रव्रज्या का वर्णन करने वाला उद्देशक है-

(अ) २०वाँ (ब) ३० वाँ

(स) ३२ वाँ (द) ३१ वाँ

१२४ जैन चरितकाव्यों का अन्तिम लक्ष्य है-

(अ) स्वर्ग प्राप्त करना(ब) मोक्ष प्राप्त करना

(स) भोग प्राप्त करना (द) धन प्राप्त करना

१२५ कैकयी के जीवन में दिखाई देता है-

(अ) उदारता (ब) स्वार्थपरता

(स) धैर्यता (द) मातृवत्सलता

१२६ प्रथम अनुप्रेक्षा का नाम है-

(अ) अशरण (ब) अनित्य

(स) संसार (द) लोक

१२७ सभी मृत्यु से रक्षा करने में असमर्थ हैं, इत्यादि विचार अनुप्रेक्षा है-

(अ) अधुरव (ब) एकत्व

(स) अशरण (द) संसार

१२८ तप के भेद है-

(अ) १० (ब) १२

(स) ४ (द) ८

१२९ संसार-भ्रमण की कारणभूत क्रियाओं का त्याग करना है-

(अ) मोक्ष (ब) आस्रव

(स) निर्जरा (द) संवर

१३० लोक द्रव्य के निवास को कहते हैं-

(अ) धर्म के (ब) अधर्म के

(स) आकाश के (द) छः द्रव्यों के

१३१ उत्तराध्ययन सूत्र में अध्याय हैं-

(अ) ३६ (ब) ३५

(स) ३७ (द) ३४

१३२ सुख-दु:ख का भोक्ता है-

(अ) पुत्र (ब) बहिन

(स) माता (द) आत्मा स्वयं

१३३ राजा श्रेणिक शासक था

(अ) पटना का (ब) मगध का

(स) वैशाली का (द) उज्जैन का

१३४ 'निज्जाय' शब्द का अर्थ है-

(अ) जाना (ब) आना

(स) निकलना (द) निर्जरा

१३५ राया शब्द है-

(अ) प्रथमा बहु वचन (ब) चतुर्थी एकवचन

(स) पंचमी बहु वचन (द) प्रथमा एकवचन

१३६ होमि शब्द है-

(अ) क्रिया (ब) सर्वनाम

(स) कृदन्त (द) अव्यय

१३७ चलने-फिरने वाले प्राणी को कहते हैं-

(अ) पृथ्वीकाय (ब) जलकाय

(स) त्रसकाय (द) अग्निकाय

१३८ अविनीत मनुष्य घिरा रहता है-

(अ) संपत्ति से (ब) मित्रों से

(स) सेवकों से (द) अनर्थों से

१३९ सर्वोच्च कल्याण होता है-

(अ) अधर्म से (ब) पुण्य से

(स) धर्म से (द) पाप से

१४० दशवैकालिक के अनुसार सभी गुणों का विनाशक है-

(अ) क्रोध (ब) मान

(स) माया (द) लोभ

१४१ क्षमा से नष्ट होता है-

(अ) चारित्र (ब) क्रोध

(स) राज्य (द) ज्ञान

१४२ धर्माचरण करना चाहिए-

(अ) जब तक बुढ़ापा नहीं सताता (ब) शरीर रोगी होने पर

(स) बुढ़ापा आ जाने पर (द) इन्द्रियाँ क्षीण होने पर

१४३ जीव संसार में सुख होगा-

(अ) आसक्ति करने से (ब) द्वेष करने से

(स) इच्छाओं को वश में करने से (द) राग करने से

१४४ सम्मं शब्द है-

(अ) कृदन्त (ब) अव्यय

(स) क्रिया विशेषण (द) सर्वनाम

१४५ निम्न में से मुक्तक काव्य है-

(अ) अष्टपाहु ड (ब) आचारांग

(स) वज्जालग्ग (द) पउमचरियं

१४६ कस्तूरविजय की रचना है-

(अ) वज्जालग्ग (ब) पउच चरियं

(स) अमांगलिक पुरुष की कथा (द) दश वैकालिक

१४७ वध के खम्भे पर खड़े हु एअमांगलिक पुरुष ने क्या मांगा-

(अ) राजा के दर्शन (ब) पानी

(स) भोजन (द) अभयदान

१४८ विदुषी पुत्रवधू के पिता का नाम था-

(अ) लक्ष्मीदास (ब) धर्मदास

(स) रामदास (द) जिनदास

१४९ लक्ष्मीदास की पुत्रवधू थी-

(अ) दुराचारिणी (ब) अभिमानी

(स) धर्मपरायण (द) अज्ञानी

१५० लक्ष्मीदास की पुत्रवधू के ससुराल में आने पर क्या हु आ-

(अ) घर में कलह (ब) धन नष्ट हो गया

(स) घर के सभी सदस्य अधर्म में लग गये (द) घर के सभी सदस्य धर्म में लग गये

उत्तरकुंजी

१	द	११	स	२१	अ	३१	स	४१	स
२	स	१२	स	२२	स	३२	ब	४२	अ
३	ब	१३	अ	२३	ब	३३	स	४३	ब
४	अ	१४	अ	२४	द	३४	स	४४	द
५	स	१५	स	२५		३५	द	४५	स
६	अ	१६	स	२६	ब	३६	ब	४६	ब
७	द	१७	अ	२७	स	३७	ब	४७	अ
८	स	१८	ब	२८	अ	३८	स	४८	स
९	अ	१९	ब	२९	अ	३९	द	४९	द
१०	स	२०	अ	३०	अ	४०	अ	५०	ब
५१	अ	६१	स	७१	ब	८१	अ	९१	स
५२	द	६२	स	७२	द	८२	द	९२	
५३	स	६३	द	७३	अ	८३	स	९३	स
५४	द	६४	ब	७४	स	८४	अ	९४	अ
५५	द	६५	अ	७५	ब	८५	अ	९५	ब
५६	द	६६	स	७६	द	८६	स	९६	अ
५७	अ	६७	ब	७७	स	८७	द	९७	ब
५८	अ	६८	स	७८	ब	८८	स	९८	अ
५९	स	६९	द	७९	अ	८९	ब	९९	द
६०	स	७०	स	८०	ब	९०	द	१००	स
१०१	स	१११	अ	१२१	द	१३१	अ	१४१	ब
१०२	अ	११२	ब	१२२	स	१३२	द	१४२	अ
१०३	द	११३	द	१२३	द	१३३	ब	१४३	स
१०४	ब	११४	स	१२४	ब	१३४	स	१४४	ब
१०५	स	११५	स	१२५	स	१३५	द	१४५	स
१०६	ब	११६	स	१२६	ब	१३६	अ	१४६	स
१०७	ब	११७	स	१२७	स	१३७	स	१४७	अ
१०८	द	११८	द	१२८	ब	१३८	द	१४८	ब
१०९	ब	११९	अ	१२९	द	१३९	स	१४९	स
११०	स	१२०	द	१३०	द	१४०	द	१५०	द